



**अॅग्रोमेट अँड वायझरी बुलेटीन**  
**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, एएमएफयु,**  
**कृषि हवामानशास्त्र विभाग**  
**कृषि महाविद्यालय, पुणे ४११ ००५**



फोन : ०२०-२९५१६२६४

ई-मेल : amfupune@gmail.com

**हवामान अंदाजावर आधारित कृषी सल्ला समितीची साप्ताहिक बैठक दि. १५/०९/२०२६**

**जिल्हा : सोलापूर**

| हवामान घटक                   | पुढील पाच दिवसांचा हवामानाचा अंदाज<br>(१५/०९/२०२६ ते १९/०९/२०२६) |     |     |     |     |
|------------------------------|------------------------------------------------------------------|-----|-----|-----|-----|
| दिनांक                       | 16                                                               | 17  | 18  | 19  | 20  |
| पाऊस (मिमी)                  | 1.0                                                              | 1.0 | 1.0 | 2.0 | 1.0 |
| कमाल तापमान (अं.से.)         | 35                                                               | 36  | 37  | 37  | 36  |
| किमान तापमान (अं.से.)        | 23                                                               | 24  | 24  | 25  | 25  |
| ढग स्थिती (आकाश)             | 3                                                                | 3   | 3   | 4   | 6   |
| सकाळची सापेक्ष आर्द्रता (%)  | 83                                                               | 80  | 79  | 80  | 77  |
| दुपारची सापेक्ष आर्द्रता (%) | 55                                                               | 54  | 52  | 51  | 58  |
| वाऱ्याचा वेग (किमी/तास)      | 9                                                                | 10  | 11  | 13  | 13  |
| वाऱ्याची दिशा (अंश)          | 275                                                              | 299 | 308 | 314 | 323 |

**हवामान अंदाजावर आधारित कृषी सल्ला**

| पीक                              | पीक अवस्था | कृषि विषयक सल्ला                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 |
|----------------------------------|------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| हवामान सारांश/ इशारा             |            | भारतीय हवामान खात्याच्या प्रादेशिक हवामान केंद्र, मुंबई यांच्या अंदाजानुसार जिल्ह्यात दिनांक १५ ते १९ सप्टेंबर, २०२६ दरम्यान तुरळक ठिकाणी पावसाची शक्यता आहे.                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    |
| विस्तारित श्रेणी अंदाज (ईआरएफएस) |            | विस्तारित श्रेणी अंदाजानुसार (ईआरएफएस) मध्य महाराष्ट्र विभागात (धुळे, नंदुरबार, जळगाव, नाशिक, अहमदनगर, पुणे, सातारा, सांगली, सोलापूर, कोल्हापूर) दिनांक २० ते २६ सप्टेंबर, २०२६ दरम्यान <ul style="list-style-type: none"> <li>पावसाचे प्रमाण सरासरी पेक्षा कमी राहण्याची शक्यता आहे.</li> <li>कमाल तापमान सरासरी इतके राहण्याची शक्यता आहे.</li> <li>किमान तापमान सरासरी इतके राहण्याची शक्यता आहे.</li> </ul>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                  |
| सामान्य सल्ला                    |            | <ul style="list-style-type: none"> <li>परावर्तकांचा वापर : अवर्षणप्रवण कालावधीत सूर्याच्या उष्णतेमुळे पिकांच्या अंतरंगातून मोठ्या प्रमाणात बाष्पीभवन होत असते. ते कमी करण्यासाठी केओलीन , पांढरा रंग अगर खडू पावडरचा ८ टक्के फवारा पानांवर दिल्यास सूर्यप्रकाश पानावरून परावर्तित होऊन पिकांच्या अंतरंगातून होणारी पाण्याची वाफ कमी करण्यास मदत होते. पर्यायी पाण्याची बचत होऊन अवर्षण कालावधीत ताण सहन होतो.</li> <li>खरीप हंगामातील रिकाम्या (नापेर) जमिनीत मूलस्थानी मृद व जलसंधारणासाठी मफुकृवि , राहुरी ने विकसित केलेले ट्रॅक्टर चलीत बंदिस्त वाफे तयार करणारे अवजार वापरून किंवा उपलब्ध यंत्राच्या सहाय्याने ६ x २ मी. आकाराचे वाफे तयार करावेत जेणेकरून पावसाचा पडणारा प्रत्येक थेंब अडवून जमिनीत जिरवला जाईल</li> <li>सर्व उभ्या पिकांना ढगाळ हवामानामुळे किड व रोगाचा प्रादुर्भाव आढळून आल्यास फुले बायोमिक्स ची फवारणी १० मिली प्रति लिटर पाणी प्रमाणे करावी. तसेच सूक्ष्म अन्नद्रव्याची कमतरता असल्यास पेरणीनंतर पीक फुलोरा अवस्थेत फुले ग्रेड II ची फवारणी १० मिली प्रति लिटर पाणी प्रमाणे करावी.</li> <li>हवामान अंदाजावर आधारित कृषि सल्ला व हवामानाच्या पूर्वानुमाना करिता 'मेघदुत' मोबाईल ॲपचा वापर करावा. मेघगर्जना व विजेच्या पूर्वानुमानाकरिता 'दामिनी' मोबाईल ॲपचा वापर करावा.</li> <li>कृषिविषयक माहितीसाठी, महात्मा फुले कृषि विद्यापीठाच्या कृषिदर्शनीचा आणि सद्यस्थितीचा विचार करता आपत्कालीन पीक नियोजन पुस्तिकेचा एक संदर्भ ग्रंथ म्हणून उपयोग करावा.</li> <li>पावसाच्या खंडांमुळे पिकांना ओलाव्याचा ताण जाणवत असेल आणि पाणी उपलब्ध असेल तर संरक्षित पाणी द्यावे अथवा २ टक्के युरिया किंवा पोटॅशियम नायट्रेटची फवारणी करावी.</li> <li>तुषार सिंचनाचा सामूहिक वापर करा. उपलब्ध पाण्याचे सामूहिक, नियोजनबद्ध व पाळीपद्धतीने वाटप करा.</li> <li>जमिनीतील ओलावा टिकविण्यासाठी उशिरा पेरणी झालेल्या पिकांमध्ये जिते शक्य असेल तिथे आंतरमशागत, मल्लिंग व तण नियंत्रण करा. उथळी आंतरमशागत करून बाष्पीभवन कमी करण्यास मदत करा; पिकांच्या मुळांना इजा होणार नाही याची काळजी घ्या.</li> <li>शक्य असल्यास पिकामध्ये कोळपणी करावी जेणेकरून जमिनीतील ओलावा जतन करून पिकांस वापरता येईल.</li> <li>पाणी उपलब्ध असल्यास पाण्याचा अत्यंत काटकसरीने वापर करावा.</li> <li>संरक्षित पाणी द्यावयाचे असल्यास तुषार अथवा ठिबक सिंचनाचा कटाक्षाने वापर करावा.</li> <li>ओलाव्याचा तीव्र ताण असल्यास पिकांवर अनावश्यक फवारणी टाळावी.</li> <li>चवळी आणि मुगाची शेंगा पक्कतेनुसार काढणी करून योग्य प्रकारे वाळवून साठवणूक करावी.</li> <li>पिकांची नियमित पाहणी करा : जमिनीतील ओलावा, पिकाची अवस्था व ताणाची लक्षणे वेळेवर ओळखा.</li> <li>सॅट्रिय आच्छादन करा : पिकांचे अवशेष , कडबा, पेंढा किंवा वाळलेले गवत वापरून जमिनीतील ओलावा टिकवा. आच्छादनामुळे बाष्पीभवन कमी होण्यास मदत होते.</li> </ul> |

|               |                         |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                        |
|---------------|-------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
|               |                         | <ul style="list-style-type: none"> <li>• प्रथम जमिनीतील ओलावा सुधारण्यास प्राधान्य द्या.</li> <li>• कीड व रोगांचे निरीक्षण करा : आर्थिक नुकसान पातळीच्या जवळपास प्रादुर्भाव आढळल्यास शिफारशीनुसार नियंत्रण उपाय करा. अनावश्यक कीटकनाशक/बुरशीनाशक फवारणी टाळा.</li> <li>• पाण्याचे प्राधान्यक्रम ठरवा : संवेदनशील अवस्थेतील पिकांना सिंचनास प्राधान्य द्या. सोयाबीन - शेंगा लागणे/दाणे भरणे.</li> <li>• पीक पक्वतेकडे असल्यास वेळेवर काढणी करा : मूग , उडीद , इ. पिकांची शेंगा/बोंडे पक्व झाल्यावर काढणी लांबवू नका. काढणीनंतर उत्पादन योग्य प्रकारे वाळवून सुरक्षित ठेवा.</li> <li>• उत्पादन वाळवून सुरक्षित साठवा ओलसर उत्पादन साठवू नका. योग्य प्रकारे वाळवून कोरड्या व हवेशीर ठिकाणी सुरक्षित साठवणूक करा.</li> </ul>                                                                                                                               |
| ऊस            | पीक वाढीची अवस्था       | <p>पूर्व हंगामी ऊस लागवडी चे नियोजन करावे. खोड किडीच्या जैविक नियंत्रणासाठी ट्रायकोग्रामा चिलोनिस (ट्रायकोकार्ड) ५ ते ६ ट्रायकोकार्ड १५ दिवसाच्या अंतराने प्रति हेक्टर वापरावे. तसेच ५ कामगंध सापळे (इ.एस.बी. ल्यूर) प्रति हेक्टर वापरावे.</p> <p>ऊस पिकावरील पायरीला किडीचे नियमित निरीक्षण करावे. सरासरी ३ ते ५ पिल्ले किंवा प्रौढ कीड प्रति पान अथवा एका पानावर एक अंडीपुंज आढळल्यास आर्थिक नुकसानीची पातळी गाठल्याचे मानून त्वरित नियंत्रणाच्या उपाययोजना सुरू कराव्यात. आर्थिक नुकसानीची पातळी ओलांडल्यानंतरच क्लोरपायरीफॉस २० टक्के ई.सी. ३० मि.ली. किंवा अॅसिफेट ५० टक्के + इमिडाक्लोप्रिड १.८० टक्के एस.पी. ५० ग्रॅम प्रति १० लिटर पाणी या प्रमाणात फवारणी करावी. फवारणीपूर्वी संबंधित कीटकनाशकाचे सध्याचे CIBRC लेबल-क्लेम, पीक व किडीसाठी मंजुरी तसेच लेबलवरील सूचना तपासूनच वापर करावा.</p>                                                 |
| सोयाबीन       | शेंगा भरण्याची अवस्था   | <p>पाने खाणाऱ्या अळीच्या नियंत्रणासाठी फ्ल्यूबेंडीअमाईड ३९.३५ % एस.सी., ३ मिली प्रति १० लिटर पाण्यातून फवारणी करावी. किडींची आर्थिक नुकसान पातळी पाहूनच फवारणी करावी.</p> <p>जेथे रुंद सरी वरंवे (बीबीएफ) पद्धतीने सोयाबीनची ही पेरणी केली आहे तेथे वेडमध्ये साठलेली ओल पिकाला उपयोगी ठरत असल्याने पिकांची वाढ नियमित पेरणी केलेल्या सोयाबीन पेक्षा समाधानकारक असल्याचे आढळून आले आहे. त्यामुळे पुढील हंगामात सोयाबीनची पेरणी बीबीएफ पद्धतीने करण्यास प्राधान्य द्यावे.</p> <p>ज्या शेतकऱ्यांनी रुंद सरी वरंवे पद्धतीचा अवलंब केलेला नाही अशा ठिकाणी पाण्याचा ताण जाणवत असेल तर दोन टक्के पोटॅशियम नायट्रेटची फवारणी करावी कारण पावसाच्या खंडामुळे पिकाला पाण्याचा ताण जाणवत आहे.</p>                                                                                                                                                                  |
| मुग/उडीद/चवळी | पक्वता ते काढणी अवस्था  | <p>मुगाच्या शेंगा पक्व झाले असल्यास त्याची पहिली तोडणी करून घ्यावे व दुसरी तोडणी ८-१० दिवसांनी करावी. उडदाच्या शेंगा पक्व झाल्या असल्यास त्याची कापणी करून घ्यावी. पावसाची शक्यता असल्याने काढणी केलेल्या शेतमालाचे संरक्षित ठिकाणी वाळवून साठवणूक करावी. मुगाच्या शेंगा खळ्यावर चांगल्या वाळवल्या असतील तर मळणी करून घ्यावी.</p>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      |
| मका           | दाणे भरण्याची अवस्था    | <p>किडींचा प्रादुर्भाव टाळण्यासाठी ८-१० कामगंध सापळे प्रति एकर लावावेत. अमेरिकन लष्करी अळीच्या नियंत्रणासाठी स्पिनेटोरम ११.७ टक्के एससी ५ मिली किंवा ब्रोफ्लानिलाइड २० टक्के एससी २.५ मिली किंवा आयसोयायक्लोसेरॅम १८.१ एससी ६ मिली किंवा इमामेक्टेन बेंझोएट १.५ टक्के + प्रोफेनोफोस ३५ टक्के डब्लुडीजी १५ ग्रॅम प्रति १० लीटर पाण्यात मिसळून फवारणी करावी.</p>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         |
| तूर           | पीक वाढीची अवस्था       | <p>तुरीच्या पिकामध्ये शेंडे खुडणी लागवडीनंतर ४५ दिवसांनी वरु न ५ सेंटीमीटर अंतरावर करावी. शेंडा खुडणी हे वाढ नियंत्रित करण्यासाठी एक प्रभावी कृषी पद्धती आहे. यामुळे पार्श्व शाखांची वाढ प्रोत्साहित होते आणि पिकाचे उत्पादन वाढते. पिकास १९:१९:१९ खताचा १ किलो प्रती २०० लिटर पाण्यातून प्रती एकर फवारणी करावी.</p>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   |
| सुर्यफुल      | दाने भरण्याची ते पक्वता | <p>सध्या दाने भरण्याच्या अवस्थेतील पिकाची पाखरापासून राखण करावी. पक्क पिकाची काढणी व मळणी करून व्यवस्थित वाळवून साठवणूक करावी.</p>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     |
| केळी          | पीक वाढीची अवस्था       | <p>करपा (सिंगाटोका) रोगाच्या नियंत्रणासाठी</p> <p>*रोगग्रस्त पानाचा भाग / पाने काढून जाळावीत.</p> <p>* पहिली फवारणी २५ ग्रॅम मॅन्कोझेब ७५% डब्ल्यू.पी. किंवा २५ ग्रॅम कॉपर ऑक्सिक्लोराईड ५० टक्के डब्ल्यू. पी. दुसरी फवारणी प्रोपिकोन्झोल ५ मिली + मिनरल ओईल १०० मिली प्रति १० लीटर पाण्यात मिसळून फवारावे.</p> <p>* कुकुबर मोझॅक (इन्फेक्शीअश) विषाणू रोगाच्या नियंत्रणासाठी प्रादुर्भाव दिसताच रोगग्रस्त झाड उपटून दूर ठिकाणी नेऊन जाळून किंवा जमिनीत गाडून नष्ट करावीत. या रोगाचा प्रसार मावा किडीमार्फत होत असल्याने नियंत्रणासाठी इमिडॅक्लोप्रिड ५ मिली प्रति १० लिटर पाण्यात मिसळून फवारावे.</p> <p>* कंद सड जीवाणूजन्य रोगाच्या नियंत्रणासाठी ब्लिचिंग पावडर ४ ग्रॅम प्रति १/२ लिटर पाण्यामध्ये मिसळून प्रती झाड आळवणी करावी.</p> <p>लागवडीनंतर २ महिन्यांनंतर जस्त या सूक्ष्म अन्नद्रव्याची ५० ग्रॅम प्रति १० लिटर पाण्यातून फवारणी करावी.</p> |
| डाळिंब        | पीक वाढीची अवस्था       | <p>फळे फुटणे रोखणे: पावसाचा खंड पडल्यास बोरॉन १ ग्रॅम + कॅल्शियम नायट्रेट १ ग्रॅम प्रति लिटर पाण्यात मिसळून फवारावे.</p> <p>मृगबहाराची फळे वाढीच्या अवस्थेत असल्यामुळे संरक्षित पाणी देणे गरजेचे आहे परंतु पाण्याची टंचाई असल्यास चाळीस ते साठ टक्के पर्यंत ठिबक सिंचनाद्वारे पाणी देण्यात यावे.</p>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   |
| पेरू          | पीक वाढीची अवस्था       | <p>अर्ध पक्क फळावर फळमाशीच्या नियंत्रणासाठी एकरी १० कामगंध (मिथिल युजिनाल) सापळे लावावेत. पेरू या पिकावर सूत्रकृमीचा प्रादुर्भाव दिसून आल्यास ट्रायकोड र्मा प्लस या जैविक नियंत्रकाची १० ग्रॅम प्रति लिटर पाणी या</p>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                  |

|                                                                                                                                  |                   |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
|                                                                                                                                  |                   | प्रमाणात खोडाभोवती आळवणी करावी. पेरूमधील एकात्मिक अन्नद्रव्य व्यवस्थापन करताना त्यामध्ये ग्रेड II या सूक्ष्म अन्नद्रव्याचा समावेश प्रामुख्याने करावा आणि फुले सुपर बायोमिक्स या जैविक उत्पादनाचा वापर ४ लीटर प्रती एकर या प्रमाणात ठिबकद्वारे करावा यामुळे जमिनीतील हानिकारक बुरशीचा नाश करता येतो.                                                                                                                                                                                                                                             |
| सिताफळ                                                                                                                           | पीक वाढीची अवस्था | सध्याच्या कमी पावसाच्या स्थितीमध्ये उपलब्ध ओलाव्याचे जतन करणेसाठी आणि यापुढे पडणाऱ्या पावसाचे पाणी मुलस्थानी मुरवण्यासाठी कोरडवाहू (पावसावर अवलंबून असलेल्या) सिताफळासाठी झडाभोवती उताराला आडवे अर्धचंद्राकृती आळे करून झाडापासून १ मीटर अंतरावर उताराच्या वरच्या बाजूस १.५ मी. लांबीचे, ३० सें. मी. रुंदीचे व ४५ सें. मी. खोलीचे चर काढून त्यामध्ये पीक अवशेषाचे स्तंभ आच्छादन करावे.                                                                                                                                                          |
| बोर                                                                                                                              | पीक वाढीची अवस्था | ढगाळ वातावरणामुळे भुरी रोगा च्या नियंत्रणासाठी कार्बेन्डॅझिम १० ग्रॅम प्रति १० लिटर पाण्यात मिसळून फवारणी करावी.<br>कळी व फळधारणा: फळांचा आकार राखण्यासाठी लहान किंवा किडलेली फळे काढून टाकावीत.<br>जमिनीत ओल टिकून राहण्यासाठी संरक्षित पाणी द्यावे.                                                                                                                                                                                                                                                                                           |
| जनावरांचे व्यवस्थापन                                                                                                             |                   | वासरु जन्मल्यानंतर त्याच्या नाकातील कानांतील व तोंडातील सर्व चिकट पदार्थ लवकरात लवकर काढून वासरांना स्वच्छ करावे, नाळ आपोआप तुटली नसल्यास ती २ ते ३ सेंटीमीटर अंतरावर जंतुनाशकामध्ये भिजवलेल्या दोन्याने घड्डू बांधून त्यापुढील भाग निर्जंतूक केलेल्या कात्रीने कापावा. त्यानंतर त्या वर दिवसातून २ ते ३ वेळा निर्जंतूक द्रावण लावावे. वासरु जन्मल्यानंतर सुमारे एक तासाच्या आत त्याच्या वजनाच्या ८ ते १० टक्के चीक पाजावा. वासराचे शिंगे व कोवळे खुर वाढू नयेत म्हणून ७ ते १० दिवसांच्या आत तज्ज्ञांच्या सहकार्याने शिंगे व कोवळे खुर काढावीत. |
| *टिप : शेतकरीबंधूनी किटकनाशकाची, बुरशीनाशकाची फवारणी करताना स्वतःची योग्य ती खबरदारी/ काळजी घेऊन किसान कवच बॉडीसुटचा वापर करावा. |                   |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 |

स्त्रोत : १) हवामान पूर्वानुमान : प्रादेशिक हवामान पूर्वानुमान केंद्र, मुंबई.

२) मागील हवामान : -

ठिकाण : कृ.म.वि., पुणे . दि. : १५.०९.२०२६

स्वाक्षरीत

प्रमुख अन्वेषक, ग्राकूमौसे, एएमएफयु, पुणे तथा  
प्रमुख, कृषि हवामानशास्त्र विभाग, कृ.म.वि., पुणे